चोलकालीन वास्तुकला

- मंदिरों के निर्माण में जिस द्रविड़ शैली का आरम्भ पल्लवों के काल में हुआ, चोलों के समय में उसका अत्यधिक विकास हुआ
- चोलों ने अपनी शक्ति एवं ऐश्वर्य का प्रदर्शन भव्य एवं उत्तुंग शिखर मंदिरों के निर्माण में किया

Ex - (1) बृहदीश्वर मंदिर - तंजौर, राजराज प्रथम ने 1009 ई० में

- यह अति विशाल मंदिर है

180 फुट लम्बा, 196 फुट ऊँचा पिरामिडनुमा शिखर है

- इस मंदिर के 4 भाग एक-दूसरे से संबद्ध एक ही धुरी पर बने हुए हैं ये भाग - नंदी मंडप, अर्द्धमंडप, मंडप और गर्भगृह।
- सारा मंदिर एक चारदीवारी के भीतर बना हुआ है
- मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण अंग - गर्भगृह और शिखर (विमान)
- यह तीन भागों में बंटा है - आधार, विमान का मध्य भाग एवं शीर्षभाग।
- पर्सी ब्राउन का मत है कि तंजौर का बृहदीश्वर मंदिर द्रविड़ और भारतीय वास्तुकला की शिल्प कला की सर्वोत्तम कृति है कसौटी है

(2) गंगैकोंड चोलपुरम - राजेन्द्र चोल 1025

- इसकी शैली तंजौर के समान ही है अंतर केवल विस्तृत अलंकरण एवं ब्यौरे का है।
- इसका विमान भी बृहदीश्वर के समान तीन भागों में विभक्त है। मंडप कम ऊँचा है किंतु इसमें 150 स्तम्भ हैं।

तंजौर मंदिर में शक्ति, संतुलन और गाम्भीर्य अधिक है जबकि गंगैकोंड के मंदिर में मार्दव, सौंदर्य और विलास अधिक है। इन दोनों मंदिरों से सिद्ध होता है